STUDY OF THE EFFECT OF LANGUAGE PROFICIENCY AND STUDY HABITS ON ACADEMIC ACHIEVEMENT

Dr Shuchi Mittal

HOD, Department of Home Science, SD(PG) College, Muzaffarnagar, UP

भाषायी दक्षता एवं अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ शुचि मित्तल

विभागाध्यक्ष, गृह विज्ञान विभाग, एसडी पीजी कॉलेज, मुजफ्फरनगर, यूपी

ABSTRACT

By acquiring linguistic proficiency, the student is able to think of his own general, specific and individual and group. To acquire linguistic proficiency, their study habits need to be developed through continuous practice. This affects their academic achievement. In the present research, the effect of language proficiency and study habits on academic achievement has been studied. According to research findings, language proficiency does not affect study habits, but study habits have an effect on academic achievement.

सारांश

भाषायी दक्षता प्राप्त कर विद्यार्थी अपने सामान्य विशिष्ट तथा व्यक्तिगत एवं सामूहिक विचार करने में सक्षम होता है। भाषायी दृष्टि से दक्षता हासिल करने के लिए निरंतर अभ्यास द्वारा उनकी अध्ययन आदतों को विकसित करने की आवश्यकता है। इससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है। प्रस्ततु शोध में भाषायी दक्षता एवं अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। शोध निष्कर्षों के अनुसार भाषायी दक्षता का अध्ययन आदत पर प्रभाव नहीं पड़ता किंतु अध्ययन आदतो का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तावना (Introduction) -

भाषा मानव-भाव की अभिव्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन है जिसके अभाव में मानव पशुतुल्य है। व्यापक रूप में विचार विनिमय के समस्त साधनों को भाषा कहते हैं। भाषा ज्ञान प्राप्ति का प्रमुख साधन है। मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास का आधार भाषा ही है। भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने भाव या विचार बोलकर या लिखकर दूसरों तक पहुँचाते हैं। भाषा मनुष्य के मुख से निःसृत वह सार्थक ध्वनि-समूह है, जिसका विश्लेषण और अध्ययन किया जा सके। यह विचार विनिमय का प्रमुख साधन है। भाषा शिक्षा प्रदान करने का उत्तम साधन है, अभिव्यक्ति का माध्यम है। इससे बच्चों में सृजनात्मक क्षमता का विकास होता है। जिस व्यक्ति की भाषा जितनी सशक्त होगी, उतनी ही सशक्त विचार-शक्ति होगी। विचार एवं भाषा का अटूट संबंध है। भारत की अधिकांश भाषाओं की लिपियों का विकास मूलतः ब्राम्ही लिपि से हुआ है। ब्राम्ही का प्रचार भारत में लगभग 350 ई. तक रहा। संसार में अनेकोनेक भाषाएँ तथा बोलियाँ हैं। एक प्रसिद्ध कहावत है –'चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार पूरे विश्व में भाषाओं तथा बोलियों की संख्या 2796 हैं।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the study) -

प्रस्तुत लधुशोध निम्न उद्देश्यों पर आधारित है -

1. विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों की प्राथमिक अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
5. अध्ययन आदत का उपलब्धि स्तर पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) -

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्मित की गयी -

1. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की भाषागत् दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
2. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

3. विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।
4. भाषायी दक्षता का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।
5. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

परिसीमन (Delimitations of the study)

स्तर – प्रस्तुत शोध में स्तर से तात्पर्य कक्षा 7वीं में अध्ययनरत छात्र छात्राओं से है।

क्षेत्र – प्रस्ततु शोध में मुज़फ्फरनगर जिले के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों का चयन क्षेत्र के रूप में किया गया है।

लिंग – प्रस्तुत शोध अध्ययन छात्र एवं छात्राओं पर किया गया है।

शोध प्रक्रिया (Research Process)

• **न्यादर्श (Sample) -** प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया।

सारणी क्रमांक – 01: चयनित शालाओं की सूची

क्र.	क्षेत्र	विद्यालय का नाम	बालक	बालिका
1	ग्रामीण	प्राण नाथ इंटर कॉलेज , पुरकाज़ी	25	25
2	ग्रामीण	डी ए वी इंटर कॉलेज , बुढ़ाना	25	25
3	शहरी	सनातन धर्म कन्या इंटर कॉलेज मुज़फ्फरनगर	25	25
4	शहरी	जैन कन्या इंटर कॉलेज मुज़फ्फरनगर	25	25
कुल योग -			100	100

उपकरण (Tools) -

अध्ययन आदत परीक्षण - एम.एन. पालसन (पुणे) एवं अनुराधा शर्मा द्वारा निर्मित मापनी - 1989

भाषायी दक्षता परीक्षण - प्रश्नों के उत्तर में एकरूपता हो इसलिए बहुविकल्पीय प्रश्नों का चयन कठिनता स्तर को ध्यान में रखकर किया गया। प्रश्नों में ज्ञानात्मक प्रयोगात्मक, कौशलात्मक, अवबोधात्मक तथ्यों का चयन किया गया है।

सांख्यिकी विश्लेषण (Statistical Operations): प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी विश्लेषण निम्नानुसार किया गया –

परिकल्पना क्रमांक – 01: "ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।"

सारणी क्रमांक – 02: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता के परीक्षणों के प्राप्तांकों का सांख्यिकी विश्लेषण

क्र.	विद्यार्थी समूह	छात्रों की संख्या N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर
1	ग्रामीण	50	20.54	5.17	98	0.020	P> .05 NS
2	शहरी	50	23.16	6.37			

व्याख्या - परिकल्पना क्रमांक 01 के अवलोकन से स्पष्ट है कि ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की भाषागत दक्षता के प्राप्तांकों के मध्यमान में ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में शहरी क्षेत्र का मध्यमान अधिक है।

इसके मध्य ज्ञात किया कि t का मान 0.020 है जो 0.05 विश्वास स्तर पर स्वतंत्रता की कोटि 98 के सारणीयन मान 1.98 से कम है अतः सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना – 01 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02 : "ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा"

सारणी क्रमांक – 03

क्र.	विद्यार्थी समूह	छात्रों की संख्या N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर
1	ग्रामीण	50	51.88	8.19	98	0.137	P< .05 NS
2	शहरी	50	54.26	8.70			

व्याख्या – उपरोक्त सारणी में ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदत का मध्यमान क्रमशः 51. 88 एवं 54.26 है। इससे स्पष्ट है कि शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदत ग्रामीण विद्यार्थियों से उच्च है। सार्थकता की जाँच हेतु t की गणना की गई जिसका मान 0.137 प्राप्त हुआ जो t के सारणीयन मान 98 स्वतंत्रता के अंश में 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.98 से कम है। अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना – 02 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03: विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

सारणी क्रमांक - 04

क्र.	विद्यार्थी समूह	छात्रों की संख्या N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर
1	अध्ययन आदत	100	53.27	8.72	198	2.623	P> .05 S
2	शैक्षिक उपलब्धि	100	37.78	14.91			

व्याख्या – स्वतंत्रता की कोटि के मान 198 के लिए 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 है जबकि t का प्राप्त मान 2.623 है जो सारणीकृत मान से ज्यादा है। अतः सार्थक अंतर पाया गया। अतः विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया। इसलिए परिकल्पना – 03 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04: "भाषायी दक्षता का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।"

सारणी क्रमांक – 05

क्र.	क्षेत्र	छात्रों की संख्या N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर
1	भाषायी दक्षता	100	21.85	8.92	198	1.693	P< .05 NS
2	अध्ययन आदत	100	53.27	8.72			

व्याख्या – स्वतंत्रता की कोटि का मान 198 के लिए सारणीयन मान 0.05 में 1.98 है जबकि t का प्राप्त मान 1.69 है जो सारणीकृत मान से कम है। अतः सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अर्थात् भाषायी दक्षता का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। इसलिए परिकल्पना – 04 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक - 05

" ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।"

सारणी क्रमांक - 06

क्र.	विद्यालय	छात्रों की संख्या N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर
1	ग्रामीण	50	41.36	13.75	98	0.025	P< .05 NS
2	शहरी	50	34.20	15.19			

व्याख्या – उपरोक्त सारणी में ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान 41.36 एवं शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान 34.20 है जो ग्रामीण विद्यार्थियों से कम है। सार्थकता की जाँच हेतु t मूल्य की गणना की गई। गणना से प्राप्त

। मूल्य का मान 0.025 है जो कि t मूल्य के सारणीयन मान 98 स्वतंत्रता के अंश तथा 0.05 विश्वास स्तर पर मान 1.98 से कम है। इसका अर्थ यह हुआ कि ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 05 स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष (Conclusions)

1. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की भाषागत दक्षता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की भाषागत दक्षता तथा शहरी विद्यार्थियों की भाषागत दक्षता लगभग समान पायी गयी।
2. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता
4. भाषायी दक्षता का छात्र-छात्राओं की अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
5. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सुझाव (Suggestions)

1. विद्यार्थियों में अध्ययन आदत विकसित करने हेतु कालखंड निश्चित किया जाना चाहिए।
2. विद्यार्थियों की रूचि के अनुसार अध्ययन सामग्री की व्यवस्था विद्यालय प्रबंधन, प्राचार्य एवं कक्षा शिक्षक द्वारा की जानी चाहिए।
3. निम्न अध्ययन आदत के छात्रों को चिन्हांकित कर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च हो सके।

संदर्भ ग्रंथ (References)

1. Jayaram, D.D. (1990) - Language teaching situation in Hindi speaking states - A survey report on the state of Rajasthan, independent study Mysore - Central Institute of Indian Languages.
2. Ramamani, (1990) - Home Language, School Language and Educational Performance - An empirical study of scheduled caste children of different Social classes, Ph-d. Edu. University Mysore, P.No. 771
3. Nirmal, K. (1979) - A comparative study of habits of High School Students, PhD., Psy. B.H.U.

4. Shrivastava, A.K. (1968) – Study habits and under achievement, journal of gen. and appl. Psychology 1,2427
5. Shewal, B.R. (1980) – An investigation in to study habits of college student 2/2 survey of educational research. Vol-II